William Pitt (विलियम पिट)

जीवन-चरित्र एवं उपलब्धियाँ

England के इतिहास के विभिन्न युगों में ऐसे राष्ट्रनायक पैदा हुए हैं जिन्होंने संकट की घड़ी में अत्यंत ही कुशलतापूर्वक देश की रक्षा की। विलियम पिट को ऐसे ही राजनीतिज्ञों की श्रेणी में माना जाता है। Plumb महोदय के अनुसार पिट ने अपने व्यक्तित्व और अपनी आत्मा के बल पर सत्ता अर्जित की तथा न सिर्फ सप्तवर्षीय युद्ध में हार को जीत में बदल दिया बल्कि अपना नाम भी इतिहास के पन्नों में अंकित करवाया।

विलियम पिट का जन्म 1708 में वेस्टमिंस्टर शहर के एक गरीब परिवार में हुआ था। उसके पिता मद्रास के गवर्नर थे। उसकी शिक्षा आक्सफोर्ड एवं ईटन के विश्वविद्यालय में हुई थी। विलियम पिट अपने समय का महान राजनीतिज्ञ था। 27 वर्ष की आयु में वह पार्लियामेंट का सदस्य निर्वाचित हुआ। संसद सदस्य बनते ही उसने वालपोल तथा ह्विग पार्टी की रिश्वतखोरी की नीति का विरोध करने लगा। वह एक उत्साही व्यक्ति था तथा वक्तृत्व कला में प्रवीण था। उस समय के बुराइयों एवं राजनीतिक भ्रष्टाचार को दूर करने में विलियम पिट का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। उसने लॉर्ड कार्टरेट द्वारा हनोवर के पक्ष में अपनायी गयी नीति का विरोध किया, जिसके फलस्वरूप वह

मंत्रिमंडल में सेना के एक उच्च पद पर नियुक्त किया गया। पेलहम की मृत्यु के बाद न्यूकैशल इंगलैंड का प्रधानमंत्री बना, पर सप्तवर्षीय युद्ध के संचालन में वह अयोग्य रहा। वस्तुतः उसने 1757 में विलियम पिट को अपने साथ मिलाकर एक संयुक्त मंत्रिमंडल की स्थापना की जो इंग्लैंड के राजनीतिक इतिहास में न्यूकैशल-पिट मंत्रिमंडल के नाम से जाना जाता है।

न्यूकैशल युद्ध संचालन सफलतापूर्वक नहीं कर सका। उसने स्वयं प्रांतीय शासन की जिम्मेदारी लिया तथा विलियम पिट को युद्ध संचालन की जिम्मेदारी मिली। चार वर्षों तक विलियम पिट इंग्लैंड का मुख्य शासक बना रहा। न्यूकैशल प्रधानमंत्री होते हुए भी अनुयायी की तरह कार्य करता रहा। विलियम पिट द्वारा सप्तवर्षीय युद्ध का संचालन अत्यंत ही सफलतापूर्वक किया गया।

विलियम पिट ने सप्तवर्षीय युद्ध को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया। उसके दो प्रमुख उद्देश्य थे— प्रथम यह कि वह इंग्लैंड को व्यापारिक तबाहियों से बचाना चाहता था और दूसरा यह कि वह इंग्लैंड के उपनिवेशों का विस्तार करना चाहता था क्योंकि पिट

ने युद्ध का उत्तरदायित्व संभाला था कि England को विजय हासिल होने लगा। उसने जर्मन सैनिकों को जो England की तरफ से लड़ने आयी थी उसे हटा दिया तथा उसके स्थान पे, स्कॉटलैण्ड के पहाड़ियों की सेना तैयार करवायी उसने वृद्ध एवं अयोग्य सैनिकों को भी हटा दिए तथा उसके स्थान पे योग्य सैनिकों की नियुक्ति करवायी। पिट ने वुल्फ, एमहर्स्ट तथा ब्रनस्विक के फर्डिनैण्ड के नेतृत्व में सेना का गठन किया। इनके नामों का महत्व England के सैनिक इतिहास में आज भी है। पिट में अद्वितीय आत्मविश्वास था। वह स्वयं कहता था - "I know, I can save the country and that no one else can." यद्यपि पिट ने स्वयं युद्ध का संचालन नहीं किया लेकिन उसने उसका प्रत्यक्ष रूप से निर्देशन अवश्य किया।

सर्वप्रथम उसने नौ-सेना का संगठन किया और फ्रांस के एटलांटिक स्थित बन्दरगाहों की नाकेबन्दी करने के लिए विशेष जहाजी बेड़ा भेजा। जिब्राल्टर स्थित नौ-सैनिक बेड़े को भू-मध्य सागर क्षेत्र की चौकसी में लगाया। इसके साथ ही उसने फ्रांस के समुद्री किनारों पर जहाँ-तहाँ आक्रमण किये।

पिट ने दूसरा काम यह किया कि यूरोपीय युद्ध में जर्मनी की कूटनीतिक, आर्थिक और सैनिक सहायता की।

cont-----

Scanned with CamScanner